International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भारत–चीन के मध्य विवादित मुद्दे

डॉ. जोगिन्द्र सिंह
प्रवक्ता, राजनीतिज्ञ विज्ञान
रा0व0मा0वि0, समरगोपालपुर, रोहतक
drjoginderdhull@gmail.com
Mob. 8295632500

शोध आलेख सार–

भारत–चीन दोनों पड़ोसी राज्य है। दोनों विश्व के दो बड़े विकासशील देश हैं। दोनों देशों की विश्व राजनीति में अहम् भूमिका है। भारत व चीन विश्व की जनसंख्सा के एक तिहाई भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। चीन एक विशाल क्षेत्रफल वाला देश है। इसका क्षेत्रफल विश्व में पांचवा तथा आर्थिक व सामरिक दृष्टि से चीन दूसरी बड़ी शक्ति है। एशिया में चीन की एक विशेष अहमियत है। एशिया का दूसरा बड़ा देश भारत है। यह विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां तथा क्रय शक्ति समतुल्यता की दृष्टि से तीसरी बड़ी शक्ति है। दोनों शक्तियों की सीमाऐं आपस में लम्बी दूरी तक लगती हैं। इन दोनों महाशक्तियों के बीच सीमा विवाद पाक अधिकृत कश्मीर विवाद, नदी बांध विवाद परस्पर शत्रुता का मूल कारण रहे है। भारत व चीन के बीच की सीमाऐं हिमालय के दुर्गम इलाकों तक फैली है। वास्तव में उनके बीच सीमा कहाँ है, यह विवाद का विषय है। सन् 1962ई0 में यह विवाद युद्ध का कारण भी बना लेकिन कोई हल नहीं निकला। चीन विवादित क्षेत्रों पर अपना दावा करता है, जिससे दोनों देशों में तनाव पैदा होता रहता है। अप्रैल 2013 में चीनी सेना ने भारतीय हिस्से में अपने तंबू गाड़ दिये थे। हालांकि उस घटना को शांतिपूर्वक सुलझा लिया गया और चीनी सेनाऐं वहां से हट गई लेकिन यह घटना एक चेतावनी के रूप में थी। इससे पता चलता है कि मुद्दे की चिन्गारी कभी भी आग का रूप ले सकती है। अभी भी सीमा पर मौजूद कुछ इलाकों को लेकर विवाद है जो कभी कभी तनाव की वजह बनता है। हाल ही के दिनों अगस्त 2017 में भी भारत और चीन के बीच डोकलाम क्षेत्र को लेकर विवाद शुरू हुआ।

मुख्य शब्द– देश, युद्ध, सीमा–विवाद, साम्राज्यवाद, डोकलाम विवाद, अतिक्रमण।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भूमिका–

भारत के उत्तर में स्थित चीन एक बड़ा और शक्तिशाली राज्य है, भारत और चीन पड़ोसी राज्य होने के चलते इनके बीच का सम्बन्ध बहुत पुराना है। चीन में जिस बौद्ध धर्म को लोग स्वीकार किये हुए हैं उसकी जन्मभूमि भारत की है। भारत और चीन वृहत इतिहास साझा करते हैं। लेकिन दोनों का 20वीं सदी के द्वितीयार्द्ध के बाद विकास भिन्न व्यवस्थाओं, विचारों एवं रास्तों पर हुआ। भारत व चीन एक लम्बी अवधि से एक–दूसरे को सामरिक, आर्थिक, एवं कूटनीतिक दृष्टि से पीछे करने के लिए प्रयत्न करते आ रहे हैं तथा एशिया में अपने वर्चस्व को लेकर उलझ रहे हैं। आज के राजनीति में चल रहे संक्रमण काल में भारत–चीन सम्बन्धों की नई पहल का महत्व दोनों देशों के हितों के लिए नहीं, अपितु तृतीय विश्व के विकासशील देशों के हित के लिए भी आवश्यक हैं। इन दो एशियाई महाशक्तियों के बीच अनसुलझा सीमा विवाद परस्पर शत्रुता का मूल है। भारत व चीन के बीच श्री सश्रर्व सीमा जो लगभग 4056 किलोमीटर है, तीन क्षेत्रों– पूर्वी क्षेत्र अरूणाचल प्रदेश में म्यांमार से भूटान तक है, मध्य नेपा के शिपकी दर्रा में लिपुलेख तक तथा पश्चिमी क्षेत्र जम्मू कश्मीर में लद्दाख से काराकोरम दर्रा तक है। पूर्वी क्षेत्र के एक बड़े भू–भाग पर चीन ने सन् 1962ई0 के युद्ध के दौरान कब्जा कर लिया। किन्तु युद्ध विराम के बाद वह पहली वाली स्थिति पर तो चला गया। लेकिन उसने प्रदेश में लगभग अपना 90,000 वर्ग किलोमीटर के सम्पूर्ण क्षेत्र पर दावा करता है। चीन भारत की सीमाओं पर बार–बार अतिक्रमण करता है और वह भारत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर दिखाना चाहता है। भारत और चीन के बीच बहुत से ऐसे मुद्दे हैं जो दोनों के रिश्तों को सामान्य नहीं होने दे रहे हैं। भारत–चीन के विवादित मुद्दे निम्न प्रकार हैं–

1. सीमा सम्बन्धी विवाद–

भारत–चीन सम्बन्धों में सबसे बड़ी बाधा दोनों देशों के बीच सीमा विवाद है। भारत तथा चीन का आंकलन तीन स्थानों से किया जाता है, जिनको विभिन्न संधियों परम्पराओं तथा प्रशासनिक प्रबन्धों द्वारा मान्यता प्राप्त की गई है।

- भारत व चीन की पश्चिमी सीमा क्षेत्र की रेखा सन्1684ई0 की लद्दाख–तिब्बत सन्धि तथा सन् 1842ई0 की कश्मीर (लद्दाख जिसका हिस्सा था) तिब्बत सन्धि द्वारा तय की गई थी।
- मध्य क्षेत्र की सीमा का विभाजन तिब्बत व चीन के मध्य सन्धि पर आधारित है, जिसे भारत ने चीन के साथ हुए 29 अप्रैल 1954 के समझौते में स्वीकार कर लिया था।
- पूर्वी सीमा रेखा का निर्धारण (जिसे नेफा क्षेत्र कहते हैं) सन् 1914ई0 में चीन व अंग्रेजों के मध्य हुए शिमला सम्मेलन द्वारा तय की गई थी। इस रेखा को मैक मोहन रेखा के नाम से भी जाना जाता है।

वर्तमान समय में भारत ने मध्य क्षेत्र में अपने अधिकार सन् 1954ई0 में छोड़कर चीन के स्वामित्व को स्वीकार कर लिया है।

सीमा अतिक्रमण का दौर–

1. **1958–59 में सीमा अतिक्रमण–** 1958–59 के वर्षों में चीन ने भारतीय सीमाओं में घुसपैठ का कार्य प्रारम्भ कर दिया। पश्चिम क्षेत्र में उसने सन् 1955ई0 में एक अक्साई–चीन क्षेत्र में चीन ने एक राजमार्ग का निर्माण कर लिया। सन 1958ई0 में चीन ने भारत के लद्दाख क्षेत्र में घुसपैठ करके उसके कुछ क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। सन 1959ई0 में भारत तथा चीन की सैनिक मुठभेड़ भी हुई। लेकिन उस समय नेहरू ने उसे दुर्गम क्षेत्र बताकर लापरवाही की।

2. मध्य क्षेत्र–बड़ाहोती क्षेत्र विवाद– बड़होती क्षेत्र के नियन्त्रण को लेकर दोनों के बीच विवाद हुआ। यह भारत का हिस्सा होने बाद भी उस पर अपना दावा जताने लगा।

3. पूर्वी क्षेत्र लोगंजु पर विवाद– इसके बाद चीन ने भारत के लोंगजु जो कि पूर्व क्षेत्र पर था पर भी अपना कब्जा कर लिया।

4. नेफा विवाद– भारत ने चीन की बढती हुई साम्राज्यवादी नीति को देखत हुए अपनी 'अग्रिम नीति' के तहत नेफा क्षेत्र में अपनी चौकियां स्थापित की ताकि मैकमोहन सीमा रेखा के निकट अपना नियन्त्रण स्थापित कर ले, लेकिन चीन ने इसका विरोध किया।

5. अक्तूबर 1962–चीनी आक्रमण– अक्तूबर 1962 में चीन ने बड़े पैमाने पर भारत पर आक्रमण कर दिया। 12 जुलाई 1962 में पश्चिमी सीमा पर लद्दाख में गलवान नदी की

घाटी की भारतीय सेना कि चौकियों पर हमला करके उन्हें घेर लिया। पूर्व में मैकमोहन रेखा के समीप अपना नियन्त्रण रेखा स्थापित कर लिया। 20 अक्तूबर 1962 को भयानक युद्द आरम्भ हो गया। चीन ने भारत के विशाल भू–भाग पर कब्जा कर लिया।

6. सन् 1963 पाक अधिकृत कश्मीर विवाद– सन् 1963 ई0 चीन ने पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्धों को सुधार कर भारत के साथ एक ओर धोखा किया। सन् 1963ई0 में पाकिस्तान के साथ समझौता करके 'पाक अधिकृत कश्मीर का 5180 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र अपने अधिकार में ले लिया। इस कश्मीर में आज चीन ने भूमिगत रेल तथा भूमिगत राष्ट्रीय राजमार्ग स्थापित कर लिए हैं। यहाँ पर सैनिक अड्डा बन रहा है। यहाँ पर वायु सेना का काफी साजो समान है। इसी क्षेत्र के माध्यम से चीन–भारत की समुद्री सीमाओं तक पहुंच जाना चाहता है। चीन भारत को गुजरात तथा राजस्थान की ओर से भी घेरना चाहता है।

7. घुसपैठ से घिरा अण्डमान–निकोबार– भारत के अरब–सागर में स्थित 572 छोटे–बड़े द्वीपों वाला केन्द्र–शासित प्रदेश, अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह में बड़े पैमाने पर चीन घुसपैठ कर रहा है। इन द्वीपों में चीन, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया और मलेशियाई लोग जबरन घुसपैठ कर रहे हैं। घुसपैठियों को अत्याधुनिक हथियारों से लैस किया जा रहा है। भारतीय सैन्य खुफिया एजेन्सी हथियारों की कई खेपें पकड़ चुकी है। अण्डमान से 18 किलोमीटर की दूर पर स्थित कोकोद्वीप व अन्यद्वीपों को चीन म्यांमार से पट्टे पर ले रखा है। चीन ने यहाँ शक्तिशाली संचार खुफिया तन्त्र विकसित कर रखा है। चीनी यहाँ से मछुआरों के भेष में आकर जासूसी कर रहे हैं। कोकाद्वीप के अलावा मान–औन्ग, हांज्ञी, जोदेत्की द्वीपों के निकट भी चीन खुफिया उपकरणों का जाल बिछा रहा है। ईरावदी नदी के मुहाने पर म्यांमार का पैगोडा प्लाइंट चीन का महत्वपूर्ण सैन्य सप्लाई का अड्डा बन चुका है। इस प्रकार चीन अपने मित्र देशों (पाकिस्तान, म्यांमार) के साथ मिलकर भारत के आस–पास अनुकूल रण क्षेत्र बना रहा है। इन सबके बावजूद भी चीन से रिश्ते सुधरने की प्रत्याशा में भारत उसकी हरकतों को सहन करता जा रहा है।

ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध –

चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर एक बांध बना रहा है। जिससे वह नदी की धारा का प्रवाह बदल सके। वह अपने विशाल रेगिस्तान में पानी पहुंचा सके। चीन का यह बांध बहु उद्देश्य

है। यह बांध भारत के बहुत क्षेत्रों के लिए बाड़ का खतरा बन सकता है। इस बांध का प्रयोग सामरिक दृष्टिकोण से भी किया जा सकता है।

अक्साई चीन–

यह जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख का एक भाग है। यह करकश नदी तल से 4300मीटर (14000फुट) तथा समुन्द्री तल से 6900 मीटर (22500 फुट) पर स्थित है। यह क्षत्र 37244 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ क्षेत्र है। प्राचीनकाल में यह व्यापार के लिए रास्ता होता था। लेकिन सन् 1962ई0 के युद्ध में चीन ने कब्जे में कर लिया।

डोकलाम विवाद–

भौगोलिक रूप से डोकलाम भारत–चीन और भूटान बार्डर के तिराहे पर स्थित है, जिसकी भारत के नाथुला पास से मात्र 15 कि.मी. की दूरी है। चुंबी घाटी में स्थित डोकलाम सामरिक दृष्टि से भारत और चीन के लिए काफी महत्वपूर्ण है। सन् 1988ई0 और सन् 1998ई0 में चीन और भूटान के बीच समझौता हुआ था कि दोनों देश डोकलाम क्षेत्र में शांति बनाए रखने की दिशा में काम करेगें। सन् 1949ई0 में भारत और भूटान के बीच एक संधि हुई थी जिसमें तय हुआ था कि भारत अपने पड़ोसी देश भूटान की विदेश नीति और रक्षा मामलों का मार्गदर्शन करेगा। सन् 2007ई0 में इस मुद्दे पर एक नई दोस्ताना संधि हुई जिसमें भूटान के भारत से निर्देश लेने की जरूरत को खत्मकर दिया और यह वैकल्पिक हो गया।

डोकलाम विवाद तब शुरू हुआ जब भारत ने पठारी क्षेत्र डोकलाम में चीन के सड़क बनाने की कोशिश का विरोध किया। यह इलाका वहां है जहां चीन और भारत के उत्तर–पूर्व में मौजूद सिक्किम राज्य और भूटान देश की सीमाऐं मिलती हैं।

भूटान और चीन दोनों देश इस इलाके पर अपना दावा करते हैं और भारत–भूटान के दावे का समर्थन करता है।

18 जून 2017ई0 को इस गतिरोध की शुरूआत हुई, जब करीब 300 से 270 भारतीय सैनिक दो बुलडोजर्स के साथ भारत चीन सीमा पार कर पीपुल्स लिबरेशन आर्मी को डोकलाम में सड़क बनाने से रोक दिया। 9 अगस्त 2017 ई0 को चीन ने दावा किया कि केवल 53 भारतीय सैनिक और एक बुलडोजर अभी डोकलाम में हैं जबकि भारत ने

इस दावे को नकारते हुए कहा कि उसके अभी वहां करीब 300–500 सैनिक उपस्थित हैं। भारत और चीन दोनों ने ही अपनी सेनाऐं सीमा की तरफ भेज दी और दोनों में से कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। मामले पर तीखी प्रतिक्रियाा देते हुए चीन ने सिक्किम के नाथुला दर्रे से होकर तिब्बत स्थित मानसरोवर तक जाने वाले 57 भारतीय तीर्थयात्रियों को कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए रास्ता देने से इंकार कर दिया।

हिन्दू धर्म में आस्था रखने वाले कैलाश मानसरोवर को पवित्र मानते हैं। इस यात्रा के लिए तीर्थयात्रियों को रास्ता देने को लेकर दोनों में औपचारिक समझौता हुआ था। परन्तु चीन लगातार समझौते का उल्लंघन कर रहा है। चीनी सेना ने लालटेन आउटपोस्ट पर भारतीय बंकरों को निशाना बनाया था। इसके जवाब में भात ने चीन पर कोई हमला नहीं किया लेकिन सीमा पर दोनों देशें के बीच धक्का–मुक्की हुई थी। इसके बाद भारतीय सेना ने चीनी सैनिकों को रोकने के लिए मानव दीवार बनाई थी।

चिकन नेक (सेवन सिस्टर्स) पर है चीन की नजर–

इस क्षेत्र को लेकर भारत के पास दो प्रमुख मुद्दे हैं, जो भारत के लिए प्रत्यक्ष चिंता का कारण बना हुआ है। चीन एकतरफा ट्राई–जंक्शन बिंदु बदल रहा है। भारत इसे सन् 2012 ई0 के एक आपसी समझौते का उल्लंघन मानता है। जैसा कि विदेश मंत्रालय के वक्तव्य में उल्लेख किया गया है कि चीन के सड़क बनाने से इलाके की मौजूदा स्थिति में अहम् बदलाव आयेगा। भारत की सिक्योरिटी के लिए गंभीर चिन्ता का विषय है। रोड़ लिंक से चीन को भारत पर एक बड़ा सैन्य लाभ होगा। इससे पूर्वोत्तर राज्यों को भारत से जोड़ने वाला कॉरिडोर रहेगा जो चीन की जद में आ जायेगा। जिससे पूर्वोत्तर से शेष भारत से काटने का खतरा बना रहेगा। ये वही इलाका है जो भारत को सेवन सिस्टर्स नाम से जानी वाले उत्तर–पूर्वी राज्यों से जोड़ता है और सामरिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण है। जहां चीन का मानना है कि इस क्षेत्र पर उनका अधिकार है और यह रोड़ उसके तिब्बत–सिल्क रोड़ का एक हिस्सा है, भारत को तुरन्त पीछे हटना होगा। वहीं भारत और भूटान चाहते हैं कि जब तक इस विवादित क्षेत्र का कोई फैसला नहीं होता रोड़ निर्माण का कार्य रोकना चाहिए एवं भविष्य में किसी भी प्रकार का निर्माण न किया जाये।

चीन ने डोकलाम में अपनी संप्रभुता दोहराई है और कहा है कि सड़क उनके इलाके में बनाई जा रही है चीन ने भारतीय सेना पर अतिक्रमण का आरोप लगाया है।

चीन का कहना है कि भारत 1962 में हुई हार को याद रखे। चीन ने भारत को चेतावनी दी है कि चीन पहले भी शक्तिशाली था और आज भी बहुत शक्तिशाली है।

चीन की चेतावनी और भारत का करारा पलटवारः 1962 का नहीं है– भारत।

चीन की चेतावनी का करारा पलटवार करते हुए अरूण जेटली ने भी कहा कि ये सन् 2017 ई0 चीन की चेतावनी और भारत का करारा पलटवारः 1962 का नहीं है भारत है और भारत अब सन् 1962 ई0 का भारत नहीं है। उन्होंने कहा था कि भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए कदम उठाने का पूरा हक है। लगभग दो महीने से चल रहे भारत चीन विवाद में चीन ने अपनी गलती सुधारते हुए भारत की बात मान ली है। चीन इस बात पर सहमत हो गया है कि भारत और चीन दोनों को अपनी सेनाऐं पीछे हटा लेनी चाहिऐं। यद्यपि चीन भी पाकिस्तान की तरह विश्वास करने योग्य नहीं है। भारत को चीन पर पूर्ण विश्वास नहीं करना चाहिए।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कूटनीति और सुषमा स्वराज की विदेश नीति की जीत के नजरिये से इस विवाद के समाधान को देखा जा सकता है।

भारत को जिस तरह रूस, अमेरिका, जापान का साथ मिला है, उससे चीन पर दबाव बनाने में भारत को मदद मिली है। यह मोदी की कूटनीति का ही असर है कि इतनी धमकियां देने के बाद भी और भारत को बार–बार अपनी सैन्य शक्ति से डराने का प्रयास करने पर भी चीन को घुटने टेकने पड़े। विशेषज्ञों का मानना है कि यह भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत है।

दोनों देश एक दूसरे के रणनीतिज्ञ प्रतिद्वंदी हैं। चीन–भारत के बाजार देखते ही अपना छद्म आचरण प्रदर्शित करता है परन्तु जैसे ही वह सामरिक–रणनीति क्षेत्र की ओर मुड़ता है वैसे ही वह भारत के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने लगता है क्योंकि राजनीतिज्ञ सोच के टकराव और रणनीतिज्ञ उद्देश्यों के बावजूद विश्व में भारत और चीन केवल ऐसे पड़ोसी देश हैं, जो परस्पर नियंत्रण रेखा से विभाजित नहीं होते। सच्चाई यह है कि विश्व इतिहास में दो देशों की सबसे लम्बी चली वार्ताओं में निष्फल रहने के लिए काफी हद तक चीन जिम्मेदार है क्योंकि उसके द्वारा गलत तरीके से जम्मू–कश्मीर के पांचवे भाग पर

किए गए कब्जे को वह वार्ता का विषय नहीं बनाना चाहता। बल्कि वह त्वांग घाटी को अपने भू–भाग में शामिल करने के लिए जो कि सामरिक रूप से महत्वपूर्ण गलियारा है, भारत से अपनी सीमाओं के पुनः सीमांकन की मांग कर रहा है। चीन निःसंकोच इस नियम पर चल रहा है कि जो कुछ उसने कब्जा किया है उन पर कोई प्रश्न नहीं उठना चाहिए लेकिन जिन क्षेत्रों पर उसका दावा है केवल उसी के सम्बन्ध में वार्ता की जा सकती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि चीन और भारत के सम्बन्धों में कुछ तनाव दिखाई दे रहा है। इस तरफ ध्यान देना आवश्यक है कि पिछले कुछ समय में भारतीय सीमा में चीनी सेना द्वारा घुसपैठ की 500 से अधिक वारदाते हुई हैं। कुछ महीने पहले चीन के एक सैन्य अभियान में भारतीय बंकरों को ढहाने की उत्तेजनापूर्ण कार्यवाही की गई। चीन के विदेशमंत्री ने भारतीय विदेश मंत्री को एक संदेश भेजकर इस बात को स्पष्ट किया कि बीजिंग सीमा सम्बन्धी किसी व्यवस्था से इस क्षेत्र के निवासियों को परेशान नहीं होने सम्बन्धी किसी सहमति से बंधा नहीं हैं।

बीजिंग के इस अडियल रवैये के पीछे मुख्यतः दो कारण नजर आते हैं।

1. पहला आर्थिक और सैन्य ताकत के तौर पर आभार ने बीजिंग को आक्रमक विदेश नीति अपनाने को प्रेरित किया है।
2. दूसरे तिब्बत में ढांचागत सुविधाओं के विस्तार के साथ ही चीन ने भारत के खिलाफ तेजी से सेना की तैनाती की क्षमता हासिल कर ली है।

निष्कर्ष–

चीन ने अपनी सीमाओं के सामरिक महत्व को देखते हुए सीमाओं पर सैनिक गतिविधियां को तेज कर दी है। यहाँ पर चीनी सेना का बहुत सुदृढ परिवहन, संचार तथा सैनिक साजो समाान तन्त्र है। भारत के लिए यह बहुत खतरनाक है। चीन ने भारत से लगती हुई सीमाओं पर सड़कों का जाल सा बना लिया है। उसकी रेलवे लाईन भारतीय सीमाओं तक पहुंच गई है। भारत से लगती सीमा पर चीन ने जोरदार तरीके से तैयार की है। सीमा पर राजमार्ग का जाल, रेलवे का जाल सैनिक अड्डे सूचनातन्त्र का विस्तार मिसाईलों की तैनाती, वायुसेना का साजो सामान यह दर्शाता है कि चीन की नीति भारत को घेरने की है। आज भारत को ठेस रणनीति तथा कड़ा संदेश देने की आवश्यकता है

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

ताकि चीन बार–बार हमारी सीमाओं का अतिक्रमण करने का साहस न कर सकें और सन् 1962 के युद्ध में खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित कर सके।

सन्दर्भ सूची–

- आर. एस. यादव, 'भारत की विदेश नीति' पियर्सन, नई दिल्ली, 2013, पृ0 170.
- आर.एस. यादव, वही, पृ0 174.
- ए. अप्पादोराय व एम.एस. राजन, इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी एण्ड रिलेशन्स, नई दिल्ली, 1985, पृ0 132.
- ए. अप्पादोराय व एम.एस. राजन, वही, पृ0 118
- एशियन न्यूज डाइजेस्ट, 24–30 अप्रैल 2005, पृ0 4437–38.
- कुमार अशोक, राजनीति विज्ञान, उपकार प्रकाशन, आगरा, 2016, पृ0 522.
- सिंह रहीस, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, लेक्सिस नेक्सिस प्रकाशन, पृ0 437.
- सिंह चनेंद्र, क्या है डोकलाम विवाद, http://m.patrika.com
- द हिन्दू, 2 अप्रैल, 2013.
- दैनिक जागरण, 11 फरवरी, 2014.
- जॉन चेरियन, 'झू रोंगजी इन इंडिया', फ्रंट लाईन, 15 जनवरी 2002, पृ0 122–125.
- भीम सन्धु, अनरिजोल्ड कनफ्लिकटः चाईना एण्ड इण्डिया, नई दिल्ली, 1989, पृ0 82.
- रूप नारायण दास, 'इण्डिया चाईना रिलेशन्स–ए न्यू पेराडिजम, इंस्टीट्यूट फॉर डिफेन्स स्टडी एण्ड एनालाइज, नई दिल्ली, मई 2013, पृ0 12.
- http://takshashila.org.in/...../2013/....TIB/Chinese.
- www.bharat_rakshak.com/montior/.....5(3).